राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

18

अमिता चौधरी

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में कुल 100 अभिभावकों (50 ग्रामीण और 50 शहरी) को शामिल किया गया, जिनमें से माता और पिता दोनों को अलग–अलग परीक्षण के माध्यम से शामिल किया गया। शोध के लिए अनुसंधान उपकरण के रूप में संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और बच्चों की डिजिटल गतिविधियों में अभिभावक की भागीदारी के दृष्टिकोण को मापा गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु औसत, मानक विचलन, t–टेस्ट और p–टेस्ट का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में माता और पिता की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति में सांख्यिकीय रूप से कोई अंतर नहीं पाया गया, जबकि ग्रामीण और शहरी अभिभावकों के दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। शहरी अभिभावक डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जिसका मुख्य कारण बेहतर इंटरनेट सुविधा, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और टेक्नोलॉजिकल जागरूकता है। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि डिजिटल शिक्षा की सफलता में अभिभावकों की भूमिका महत्वपूर्ण है और पॉलिसी निर्माता, शिक्षक एवं स्कूल प्रबंधन को यह ध्यान में रखते हुए रणनीति बनानी चाहिए कि डिजिटल शिक्षा समान रूप से ग्रामीण और शहरी छात्रों के लिए प्रभावी और सुलभ हो।

अमिता चौधरी
शोधार्थी, संस्थागत संबद्धताः भदावर विद्या मंदिर पी.जी. कॉलेज, बाह, आगरा
Email: aartichaudhary190@gmail.com
Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB355-F26.Ch.18
Book: भारत में नवोन्मेषी शोधः राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली और तकनीकी का संगम
Plagiarism Report: 09%

मुख्य शब्दः *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन लर्निंग, अभिभावक दृष्टिकोण, ग्रामीण और शहरी तुलना।*

परिचय

डिजिटल तकनीक के तीव्र विकास ने विश्वभर की शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। भारत में यह परिवर्तन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद और अधिक संरचित रूप में सामने आया है। यह नीति शिक्षण, अधिगम तथा विद्यालय प्रबंधन के प्रत्येक स्तर पर प्रौद्योगिकी के प्रभावी समावेशन पर विशेष बल देती है। शिक्षा की गुणवत्ता एवं पहुँच को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से नीति में डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म का उपयोग तथा तकनीक–समर्थित कक्षा प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित किया गया है। COVID-19 महामारी के दौरान अधिकांश स्कूलों के वर्चुअल शिक्षण अपनाने के परिणामस्वरूप डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा का विस्तार और अधिक तेजी से हुआ।

यद्यपि डिजिटल शिक्षा ने व्यापक प्रगति की है, फिर भी इसकी वास्तविक सफलता काफी हद तक अभिभावकों के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, क्योंकि वे बच्चों के घरेलू अधिगम वातावरण को सीधे प्रभावित करते हैं। अभिभावक अपने बच्चों को डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराते हैं, ऑनलाइन गतिविधियों की निगरानी करते हैं तथा स्वस्थ डिजिटल आदतों को विकसित करने में सहयोग देते हैं। इसलिए तकनीक–आधारित शिक्षा के वास्तविक प्रभाव का आकलन करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि अभिभावक डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा को किस प्रकार देखते हैं। भारत में संसाधनों की उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल जागरूकता तथा आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। शहरी क्षेत्रों में सामान्यतः डिजिटल साधनों और ऑनलाइन शिक्षण सुविधाओं की अधिक उपलब्धता होती है।

जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर नेटवर्क, सीमित उपकरण, कम डिजिटल अनुभव और तकनीकी जागरूकता जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। ऐसे अंतर दोनों क्षेत्रों के अभिभावकों की डिजिटल शिक्षा के प्रति दृष्टि को प्रभावित कर सकते हैं। अतः डिजिटल असमानता को समझने के लिए ग्रामीण और शहरी संदर्भों में अभिभावकीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्ययन "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" इन दोनों क्षेत्रों के अभिभावकों की दृष्टि में विद्यमान समानताओं या असमानताओं की पहचान करना चाहता है। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि क्या NEP 2020 ने दोनों क्षेत्रों के अभिभावकों के दृष्टिकोण को समान रूप से प्रभावित किया है या सामाजिक, आर्थिक एवं अवसंरचनात्मक भिन्नताओं के कारण अब भी अंतर बने हुए हैं। अभिभावकों के सहयोग, चिंताओं, अपेक्षाओं एवं डिजिटल शिक्षा को स्वीकार

करने की प्रवृत्ति का विश्लेषण करके यह शोध प्रौद्योगिकी–आधारित अधिगम से संबंधित साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इसके निष्कर्ष शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं को ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के समुदायों की आवश्यकताओं के अनुरूप रणनीतियाँ तैयार करने में सहायक होंगे। समग्र रूप से, यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु मौजूद चुनौतियों और संभावनाओं को रेखांकित करते हुए डिजिटल शिक्षा को सभी छात्रों के लिए अधिक पहुँच योग्य, समानता–आधारित एवं प्रभावी बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद शिक्षा में डिजिटल तकनीक का प्रयोग तेजी से बढ़ा है, जिससे यह समझना आवश्यक हो गया है कि अभिभावक डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा को किस दृष्टि से देखते हैं। चूंकि अभिभावक घर पर सीखने का वातावरण बनाते हैं, इसलिए उनकी अभिवृत्ति छात्रों की सीखने की गति, प्रेरणा और डिजिटल सुविधाओं की उपलब्धता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच तकनीकी संसाधनों, इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल जागरूकता में अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन असमानताओं के कारण दोनों क्षेत्रों के अभिभावकों की डिजिटल शिक्षा के प्रति स्वीकृति और समर्थन में भिन्नताएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इन अंतर को समझना समावेशी शैक्षिक नीतियों और योजनाओं के निर्माण के लिए अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तकनीक–आधारित शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और सुलभ बनाने पर जोर देता है। अतः अभिभावकों की धारणा का अध्ययन करने से इस नीति के वास्तविक प्रभाव का आकलन किया जा सकेगा और स्कूलों व नीति–निर्माताओं को ऐसे उपाय निर्धारित करने में सहायता मिलेगी, जो ग्रामीण और शहरी दोनों समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

यह अध्ययन डिजिटल विभाजन को कम करने, समान शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देने और डिजिटल शिक्षा को सभी छात्रों के लिए अधिक प्रभावी और सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

भारतीय अध्ययन

- नायर और थॉमस (2020) ने भारतीय स्कूलों में डिजिटल साक्षरता और ई–लर्निंग पर अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि अभिभावक अपने बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में किस प्रकार योगदान देते हैं। निष्कर्ष से पता चला कि अभिभावक बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और जागरूक अभिभावक बच्चों को बेहतर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- सिंह और सिंह (2021) ने स्कूल शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका का विश्लेषण किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों

की सहभागिता और दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना था। निष्कर्ष के अनुसार अभिभावक शिक्षा प्रक्रिया में सहयोगी होते हैं और उनकी सकारात्मक दृष्टि बच्चों की सीखने की गति और गुणवत्ता को बढ़ाती है।

- शर्मा और गुप्ता (2021) ने ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की डिजिटल लर्निंग के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में उद्देश्य था यह समझना कि संसाधनों और जागरूकता के आधार पर अभिभावकों के दृष्टिकोण में अंतर है या नहीं। निष्कर्ष से स्पष्ट हुआ कि शहरी अभिभावकों के पास बेहतर तकनीकी संसाधन और नेटवर्क सुविधा है, जबकि ग्रामीण अभिभावक डिजिटल शिक्षा के प्रति कम समर्थ हैं।
- बसक और कुमार (2021) ने COVID-19 महामारी के बाद भारत में डिजिटल शिक्षा के अवसर और चुनौतियों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य अभिभावकों के योगदान और डिजिटल शिक्षा की स्वीकार्यता को समझना था। निष्कर्ष में पाया गया कि डिजिटल शिक्षा की सफलता में अभिभावकों का समर्थन महत्वपूर्ण है, जबकि तकनीकी बाधाएँ और संसाधनों की कमी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख चुनौती हैं।
- कुमार और शर्मा (2022) ने शहरी और ग्रामीण अभिभावकों के डिजिटल शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि दोनों क्षेत्रों के अभिभावकों के दृष्टिकोण में कितना अंतर है। निष्कर्ष से स्पष्ट हुआ कि शहरी अभिभावक डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक हैं, जबकि ग्रामीण अभिभावक संसाधनों और जागरूकता की कमी के कारण कम सक्रिय हैं।

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन

- हॉलोवे और वैलेंटाइन (2003) ने बच्चों की डिजिटल गतिविधियों में माता–पिता की भूमिका का अध्ययन किया। उद्देश्य था यह देखना कि अभिभावक बच्चों के ऑनलाइन अनुभव को कैसे नियंत्रित और मार्गदर्शित करते हैं। निष्कर्ष में पाया गया कि अभिभावक का मार्गदर्शन डिजिटल साक्षरता और शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।
- लिविंगस्टोन और अन्य (2014) ने यूरोपीय देशों में अभिभावकों का इंटरनेट शिक्षा में दृष्टिकोण और सहभागिता का अध्ययन किया। उद्देश्य था बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता को समझना। निष्कर्ष में पाया गया कि अभिभावक बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा के लिए मार्गदर्शन और निगरानी करते हैं, जिससे सीखने की गुणवत्ता बढ़ती है।
- बाक्कर और अन्य (2017) ने डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म पर अभिभावकों की भागीदारी और छात्रों की सीखने की सफलता का अध्ययन किया। उद्देश्य था यह समझना कि अभिभावकों की सहभागिता छात्रों के सीखने और डिजिटल शिक्षा की स्वीकार्यता को कैसे प्रभावित करती है। निष्कर्ष

से पता चला कि अभिभावकों की भागीदारी छात्रों के सीखने की सफलता और डिजिटल शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में सुधार लाती है।

- झाओ और अन्य (2020) ने COVID-19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षा और अभिभावकों का समर्थन का अध्ययन किया। उद्देश्य था यह जानना कि अभिभावकों का समर्थन ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता पर किस प्रकार प्रभाव डालता है। निष्कर्ष में पाया गया कि अभिभावकों का समर्थन ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता बढ़ाता है, जबकि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

समस्या कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन ।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

डिजिटल शिक्षा

प्रस्तुत शोध में डिजिटल शिक्षा से अभिप्राय है सीखने और शिक्षण की वह प्रक्रिया जिसमें तकनीकी उपकरण (जैसे कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट, स्मार्टफोन) और डिजिटल संसाधनों का उपयोग किया जाता है। इसमें छात्र ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और शैक्षिक ऐप्स के माध्यम से अध्ययन करते हैं और अभिभावक उनके सीखने की गतिविधियों की निगरानी करते हैं।

ऑनलाइन लर्निंग

प्रस्तुत शोध में ऑनलाइन लर्निंग से अभिप्राय है इंटरनेट के माध्यम से संचालित शिक्षा प्रक्रिया, जिसमें वीडियो क्लासेस, डिजिटल असाइनमेंट, ऑनलाइन टेस्ट और शैक्षिक ऐप्स शामिल हैं। अध्ययन में इसका मतलब है कि छात्र घर या स्कूल में इंटरनेट आधारित शिक्षा गतिविधियों में भाग लेते हैं और अभिभावक उनकी मदद करते हैं।

अभिभावक दृष्टिकोण

प्रस्तुत शोध में अभिभावक दृष्टिकोण से अभिप्राय है माता–पिता की धारणाएँ, मान्यताएँ, अपेक्षाएँ और प्रतिक्रिया जब उनके बच्चे डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा में भाग लेते हैं। इसे बच्चों की डिजिटल शिक्षा की स्वीकार्यता, समर्थन और निगरानी के संदर्भ में मापा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्रस्तुत शोध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से अभिप्राय है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो भारत सरकार द्वारा लागू की गई शिक्षा नीति है और शिक्षा प्रणाली में सुधार, डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा के समावेश, गुणवत्ता और पहुँच बढ़ाने पर केंद्रित है। इस अध्ययन में इसका अर्थ है स्कूल स्तर पर डिजिटल शिक्षा के प्रावधान और अभिभावकों की भागीदारी।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्र

- प्रस्तुत शोध में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र से अभिप्राय है अध्ययन के उन क्षेत्रों से जहाँ छात्र अध्ययनरत हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रः ऐसे इलाके जहाँ शिक्षा और डिजिटल संसाधनों की पहुँच सीमित होती है, इंटरनेट और तकनीकी जागरूकता कम होती है।
- शहरी क्षेत्रः ऐसे इलाके जहाँ स्कूल और घरों में डिजिटल उपकरण, इंटरनेट और तकनीकी संसाधनों की बेहतर उपलब्धता होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की सीमाएँ

वर्तमान अध्ययन केवल लखनऊ जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत लड़कों एवं लड़कियों के 100 अभिभावकों के नमूने तक सीमित है। चूँकि नमूना आकार छोटा है और एक ही जिले तक सीमित है।

अनुसंधान प्रक्रिया

इस अध्ययन में अनुसंधान प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप से विभिन्न चरणों के माध्यम से पूरा किया गया। सबसे पहले शोध समस्या का चयन किया गया तथा

संबंधित साहित्य का अध्ययन करके अध्ययन की पृष्ठभूमि और आवश्यकता को स्पष्ट किया गया। इसके बाद अध्ययन के उद्देश्य तय किए गए और उपयुक्त अनुसंधान विधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का चयन किया गया। अध्ययन हेतु लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों को शामिल किया गया।

जनसंख्या

इस शोध की जनसंख्या लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के सभी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के अभिभावक हैं। अर्थात वह संपूर्ण समूह जिससे अध्ययन का नमूना लिया गया है।

नमूना

अध्ययन के लिए सरल यादृच्छिक नमूना तकनीक के माध्यम से कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसमें ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के ऐसे विद्यार्थी शामिल थे, जो माध्यमिक स्तर (कक्षा 9) में अध्ययनरत थे। नमूने में छात्र एवं छात्राओं दोनों को समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया।

उपकरण

डेटा एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। यह प्रश्नावली दो भागों में विभाजित थी।

1. व्यक्तिगत जानकारी से संबंधित प्रश्न
2. डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृति को मापने वाले प्रश्न

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन में एकत्रित डाटा के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। सर्वप्रथम ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की अभिवृति का वर्णन करने के लिए मध्यमान और मानक विचलन की गणना की गई। इसके बाद दोनों समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु t-test का प्रयोग किया गया। इन तकनीकों के माध्यम से ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की अभिवृति में पाए गए अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

सारिणी क्रमांक– 01

ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों (माता और पिता) की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति

समूह	N	M	SD	df	t	p- मान	सार्थकता
ग्रामीण माता	25	48.80	6.30	48	0.87	0.387	असार्थक
ग्रामीण पिता	25	47.25	6.50				

ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों में माता और पिता के दृष्टिकोण की तुलना करने पर t(48) = 0.87 तथा च = 0.387 प्राप्त हुआ। चूंकि p-value 0.05 से

अधिक है, इसका अर्थ है कि ग्रामीण माता और पिता की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारिणी क्रमांक– 02

शहरी क्षेत्र के अभिभावकों (माता और पिता) की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति

समूह	N	M	SD	df	t	P–मान	सार्थकता
शहरी माता	25	52.50	7.90	48	0.66	0.512	असार्थक
शहरी पिता	25	51.10	8.30				

शहरी क्षेत्र के अभिभावकों में माता और पिता के दृष्टिकोण की तुलना करने पर $t(48) = 0.66$ तथा $p = 0.512$ प्राप्त हुआ। चूंकि p-value 0.05 से अधिक है, इसका अर्थ है कि शहरी माता और पिता की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारिणी क्रमांक– 03

ग्रामीण और शहरी अभिभावकों (माता और पिता) की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	M	SD	df	t	p- मान	सार्थकता
ग्रामीण माता	25	48.80	6.30	98	2.27	0.026	सार्थक
ग्रामीण पिता	25	47.25	6.50				
शहरी माता	25	52.50	7.90				
शहरी पिता	25	51.10	8.30				

ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की तुलना करने पर $t(98) = 2.27$ तथा $p = 0.026$ प्राप्त हुआ। चूंकि p-value 0.05 से कम है, इसका अर्थ है कि ग्रामीण और शहरी माता–पिता की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर मौजूद है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में माता और पिता की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया, यानी उनके दृष्टिकोण लगभग समान हैं। इसी प्रकार, शहरी क्षेत्र में भी माता और पिता की अभिवृति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया। तुलनात्मक अध्ययन से यह भी पता चला कि ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृति में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर मौजूद है, जहाँ शहरी माता–पिता ग्रामीण माता–पिता की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। यह अंतर मुख्यतः शहरी क्षेत्रों में बेहतर इंटरनेट सुविधा, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और टेक्नोलॉजिकल जागरूकता के कारण उत्पन्न होता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों की

डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा में माता–पिता की भागीदारी और उनके दृष्टिकोण का महत्व अत्यधिक है, और पॉलिसी बनाने तथा डिजिटल शिक्षा के कार्यक्रम तैयार करते समय ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की भिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

संदर्भ

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्लीः भारत सरकार.
2. बसक, एस., – कुमार, ए. (2021). भारत में डिजिटल शिक्षाः COVID-19 के बाद अवसर और चुनौतियाँ. International Journal of Educational Development 83, 102365.
3. कुमार, वी., – शर्मा, आर. (2022). माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की धारणाः शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन Journal of Educational Research and Practice, 12(3), 45–56.
4. नायर, के., – थॉमस, एल. (2020). डिजिटल साक्षरता और ई–लर्निंगः भारतीय स्कूलों के अभिभावकों का दृष्टिकोण Education and Information Technologies, 25 (6), 5457–5475.
5. सिंह, पी., – सिंह, एस. (2021). स्कूल शिक्षा में अभिभावकों की भूमिकाः भारत में एक अध्ययन. Asian Education Studies, 6(2), 12–23.
6. शर्मा, एम., – गुप्ता, आर. (2021). ग्रामीण और शहरी अभिभावकों की डिजिटल लर्निंग के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण International Journal of Education and Development using ICT, 17(3), 78–95.
7. UNESCO. (2020). COVID-19 के दौरान दूरस्थ शिक्षा और अभिभावकों की भागीदारी पेरिसः UNESCO